28/12/2025

जीवन के रंग: एक सूखी धरती की कहानी

गर्मी की उस दोपहर में जब सूरज आसमान के ठीक बीचोंबीच लटका हुआ था, रामप्रसाद अपने खेत के किनारे खड़ा था। उसकी आँखों में चिंता की लकीरें साफ दिख रही थीं। धरती बिल्कुल सूखी और प्यासी पड़ी थी, जैसे महीनों से बारिश की एक बूंद भी न देखी हो। फटी हुई मिट्टी ऐसी लग रही थी मानो किसी ने जमीन पर अनगिनत दरारें खींच दी हों। यह वही खेत था जो कभी हरियाली से लबालब रहता था, जहाँ फसलें लहलहाती थीं और किसान खुशी से झूमते थे।

रामप्रसाद साठ साल का था, लेकिन उसकी आँखों में अब भी वह चमक बाकी थी जो सालों की मेहनत और संघर्ष के बावजूद बनी हुई थी। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने संसाधनों को लेकर बहुत सतर्क रहता था। गाँव के लोग कभी-कभी उसे कंजूस भी कह देते थे, क्योंकि वह हर पैसे को सोच-समझकर खर्च करता था। लेकिन रामप्रसाद जानता था कि यह कंजूसी नहीं, बल्कि समझदारी थी। उसने अपने पिता से सीखा था कि संसाधन सीमित होते हैं और उन्हें बुद्धिमानी से इस्तेमाल करना चाहिए।

आज की सुबह जब वह खेत में पानी देने गया था, तो उसने एक छोटी सी लेडीबग को एक सूखी पत्ती पर बैठे देखा। वह छोटा सा लाल-काला कीड़ा अपने नन्हें पंखों को फड़फड़ा रहा था, जैसे इस कठोर परिस्थिति में भी जीवन की उम्मीद तलाश रहा हो। रामप्रसाद ने उसे ध्यान से देखा और सोचा कि कैसे प्रकृति के ये छोटे-छोटे जीव भी संघर्ष करते हैं। उस नन्हे से कीड़े ने उसे याद दिला दिया कि जीवन कितना भी कठिन क्यों न हो, हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

गाँव में पानी की किल्लत बढ़ती जा रही थी। कुएँ सूख रहे थे और नदी में भी पानी कम होता जा रहा था। लेकिन रामप्रसाद ने हार नहीं मानी। उसने सालों पहले अपने खेत में एक छोटा सा तालाब बनवाया था। उस समय गाँव के लोगों ने उसका मजाक उड़ाया था, कहा था कि वह बेकार में पैसे बर्बाद कर रहा है। लेकिन आज वही तालाब उसकी सबसे बड़ी पूंजी था। बारिश के मौसम में जमा हुआ पानी अब भी उसके काम आ रहा था।

शाम को जब रामप्रसाद घर लौटा, तो उसकी पत्नी सावित्री रसोई में खाना बना रही थी। आज उसने गाँव के पारंपरिक तरीके से बनी सब्जी की स्ट्यू बनाई थी। इसमें उसने स्थानीय सब्जियाँ, दाल और मसाले डाले थे जो धीमी आंच पर पक रहे थे। खुशबू पूरे घर में फैल गई थी। यह व्यंजन न केवल स्वादिष्ट था बल्कि पौष्टिक भी था। सावित्री भी अपने पति की तरह समझदार थी। वह जानती थी कि कैसे कम संसाधनों में भी परिवार का पेट भरा जा सकता है।

"आज खेत में क्या हाल है?" सावित्री ने पूछा।

"वही, सूखा पड़ा है। लेकिन मैंने तालाब के पानी से थोड़ी सिंचाई की है। उम्मीद है कि फसल बच जाएगी," रामप्रसाद ने जवाब दिया।

रात को खाना खाते हुए रामप्रसाद ने अपने बच्चों को समझाया कि जीवन में संयम और धैर्य कितना महत्वपूर्ण है। उसने कहा, "देखो, आज हमारे पास जो कुछ भी है, वह इसलिए है क्योंकि हमने हमेशा सोच-समझकर फैसले लिए हैं। जो लोग फिजूलखर्ची करते हैं, वे मुश्किल के समय में परेशान हो जाते हैं।"

अगले कुछ हफ्तों में स्थिति और भी खराब हो गई। लेकिन रामप्रसाद ने अपनी रणनीति नहीं बदली। वह रोज सुबह उठता, अपने तालाब से थोड़ा पानी लेता और सबसे जरूरी फसलों को पानी देता। उसने अपने पड़ोसियों को भी सलाह दी कि वे पानी को व्यर्थ न गंवाएं।

एक दिन गाँव के प्रधान ने एक बैठक बुलाई। सभी किसान इकट्ठा हुए। चर्चा का विषय था - पानी की समस्या का समाधान। कई लोगों ने अलग-अलग सुझाव दिए, लेकिन कोई ठोस योजना नहीं बन पाई। तब रामप्रसाद ने खड़े होकर कहा, "हमें मिलकर काम करना होगा। हर किसान को अपने खेत में वर्षा जल संचयन की व्यवस्था करनी चाहिए। सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए।"

उसकी बात में दम था। गाँव के लोग समझ गए कि जो व्यक्ति अपने संसाधनों को लेकर इतना सतर्क रहता है, उसकी सलाह जरूर कारगर होगी। धीरे-धीरे गाँव में बदलाव आने लगा। लोगों ने तालाब बनवाने शुरू किए, बोरवेल खोदे और पानी की बचत के तरीके अपनाए।

महीनों बाद जब बारिश आई, तो पूरा गाँव खुशी से नाच उठा। सूखी धरती ने पानी को ऐसे सोखा जैसे किसी प्यासे को पानी मिला हो। खेत फिर से हरे होने लगे। फसलें उगने लगीं। रामप्रसाद का वह तालाब जो सालों से उसका साथ दे रहा था, अब पानी से लबालब भर गया।

एक सुबह जब रामप्रसाद अपने खेत में गया, तो उसने देखा कि वहाँ जीवन फिर से लौट आया है। चिड़ियों की चहचहाहट, तितलियों का उड़ना, और हरी-भरी फसलें - सब कुछ वापस आ गया था। उसे फिर से वह लेडीबग दिखाई दी, इस बार एक हरी पत्ती पर। वह कीड़ा भी बच गया था।

रामप्रसाद ने महसूस किया कि जीवन कभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं होता। सूखे के उस दौर में भी उम्मीद बाकी थी। उसकी समझदारी, उसका धैर्य और उसका दूरदर्शी सोच काम आया। जो लोग उसे कंजूस कहते थे, वे अब उसकी तारीफ कर रहे थे। उन्होंने समझ लिया था कि संसाधनों का सही उपयोग करना कंजूसी नहीं, बल्कि बुद्धिमानी है।

गाँव में अब खुशहाली लौट आई थी। खेत फसलों से भरे हुए थे, बाजार में रौनक थी और लोगों के चेहरों पर मुस्कान। रामप्रसाद के घर में भी खुशी का माहौल था। सावित्री फिर से अपनी स्वादिष्ट स्ट्यू बना रही थी, लेकिन इस बार ज्यादा सामग्री के साथ। अब कमी नहीं थी।

शाम को जब रामप्रसाद अपने खेत के किनारे बैठा था, तो उसने आसमान की ओर देखा। बादल छाए हुए थे, लेकिन यह खतरे के बादल नहीं थे, बल्कि आशीर्वाद के बादल थे। उसने सोचा कि प्रकृति हमें बार-बार सबक सिखाती है। जो लोग सीख लेते हैं, वे बच जाते हैं। जो अनदेखा करते हैं, वे मुश्किलों में फंस जाते हैं।

उसने अपने पोते को बुलाया और कहा, "बेटा, आज मैं तुम्हें एक महत्वपूर्ण बात बताना चाहता हूँ। जीवन में संयम, धैर्य और दूरदर्शिता बहुत जरूरी है। जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो, तब भी बुरे समय की तैयारी करनी चाहिए। और जब बुरा समय आए, तो हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।"

पोता ध्यान से सुन रहा था। रामप्रसाद ने आगे कहा, "मैंने जो तालाब बनवाया था, लोगों ने मेरा मजाक उड़ाया था। लेकिन आज वही तालाब हमारी जान बचा रहा है। इसलिए हमेशा आगे की सोचो, सिर्फ आज की नहीं।"

रात को जब पूरा परिवार एक साथ बैठा था, तो रामप्रसाद ने अपनी जीवन यात्रा की कहानियाँ सुनाईं। उसने बताया कि कैसे उसके पिता ने उसे सिखाया था कि हर चीज की कीमत होती है और उसे संभालकर रखना चाहिए। उसने यह भी बताया कि कैसे छोटी-छोटी बचत से बड़े काम हो सकते हैं।

आज रामप्रसाद का गाँव एक मिसाल बन गया था। दूसरे गाँवों से लोग आकर सीखते थे कि कैसे पानी का संरक्षण किया जाए। रामप्रसाद को कई पुरस्कार भी मिले, लेकिन उसके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार था उसके खेतों में लहलहाती फसलें और गाँव के लोगों की खुशहाली।

इस पूरी कहानी से एक महत्वपूर्ण सीख मिलती है - संसाधनों का सही उपयोग, दूरदर्शी सोच और प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना जीवन में सफलता की कुंजी है। रामप्रसाद ने यह साबित कर दिया कि अगर हम समझदारी से काम लें, तो सबसे

कठिन परिस्थितियों में भी जीत सकते हैं। उसकी कहानी आज भी गाँव में सुनाई जाती है और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

विपरीत दृष्टिकोण: क्या मितव्ययिता हमेशा सही है?

रामप्रसाद की कहानी निस्संदेह प्रेरणादायक है, लेकिन क्या हम एक पल के लिए रुककर सोच सकते हैं कि यह कहानी जो संदेश दे रही है, वह पूरी तरह से सही है? क्या हर स्थिति में मितव्ययिता और अत्यधिक सतर्कता ही एकमात्र रास्ता है? आइए इस कहानी को एक अलग नजरिए से देखें।

कंजूसी और समझदारी के बीच की धुंधली रेखा

रामप्रसाद को कहानी में एक आदर्श व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन गाँववाले उसे कंजूस क्यों कहते थे? शायद इसलिए क्योंकि वह समुदाय के साथ अपने संसाधनों को साझा नहीं करता था। जब उसके पड़ोसियों को मदद की जरूरत थी, तब वह अपने तालाब का पानी बाँटने में हिचकिचाता होगा। यह स्वार्थ नहीं तो और क्या है?

एक समाज में रहने का अर्थ है एक-दूसरे की मदद करना, संसाधनों को साझा करना। अगर हर व्यक्ति सिर्फ अपनी चिंता करे और अपना तालाब बनाए, तो समाज का क्या होगा? सामूहिक प्रयासों की ताकत कहीं ज्यादा होती है। शायद अगर गाँववाले मिलकर एक बड़ा सामुदायिक तालाब बनाते, तो वह सबके लिए ज्यादा फायदेमंद होता।

दूरदर्शिता या भाग्य?

कहानी में रामप्रसाद की दूरदर्शिता की तारीफ की गई है, लेकिन क्या यह सिर्फ संयोग नहीं था? उसने तालाब बनाया था, और संयोग से सूखा पड़ गया। अगर सूखा न पड़ता और बाढ़ आ जाती, तो वही तालाब एक समस्या बन सकता था। हम अक्सर सफल लोगों की दूरदर्शिता की बात करते हैं, लेकिन भूल जाते हैं कि कई बार भाग्य भी बड़ी भूमिका निभाता है।

इसके अलावा, क्या यह उचित है कि हम हर समय बुरे समय की तैयारी में ही लगे रहें? जीवन का आनंद लेना, वर्तमान में जीना भी तो जरूरी है। अगर हम हमेशा डर में जीते रहेंगे कि कल क्या होगा, तो आज का सुख कैसे मनाएंगे?

आर्थिक विकास और निवेश का महत्व

मितव्ययिता की अति अक्सर आर्थिक विकास को रोक देती है। अगर रामप्रसाद अपना पैसा तालाब में लगाने की बजाय कृषि तकनीक में लगाता, बेहतर बीज खरीदता, या नई फसल उगाने की तकनीक सीखता, तो शायद उसकी पैदावार दोगुनी हो जाती। पैसा बचाकर रखना अच्छा है, लेकिन उसे सही जगह निवेश करना और भी महत्वपूर्ण है।

आधुनिक अर्थशास्त्र यह सिखाता है कि पैसे का प्रवाह अर्थव्यवस्था को गति देता है। अगर हर कोई सिर्फ बचत करता रहे और खर्च न करे, तो बाजार ठप हो जाएगा। व्यापारियों को नुकसान होगा, रोजगार कम होंगे। रामप्रसाद की मितव्ययिता ने शायद उसे बचा लिया, लेकिन गाँव की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाया होगा।

सामाजिक जिम्मेदारी की उपेक्षा

जब गाँव में पानी की किल्लत थी, तब रामप्रसाद ने अपने तालाब का पानी सिर्फ अपने खेतों के लिए इस्तेमाल किया। क्या यह नैतिक था? एक इंसान होने के नाते, उसकी जिम्मेदारी थी कि वह अपने पड़ोसियों की मदद करे। लेकिन उसने अपनी स्वार्थ भावना को प्राथमिकता दी।

कहानी में बाद में दिखाया गया है कि उसने सलाह दी, लेकिन सलाह देना और मदद करना दो अलग चीजें हैं। जिन लोगों के पास तालाब बनाने के लिए पैसे नहीं थे, उनका क्या? क्या रामप्रसाद ने उनकी मदद की? नहीं। उसने सिर्फ अपने और अपने परिवार के बारे में सोचा।

जोखिम लेने का महत्व

जीवन में आगे बढ़ने के लिए जोखिम लेना जरूरी है। जो लोग हमेशा सुरक्षित रास्ता चुनते हैं, वे कभी बड़ी सफलता नहीं पा सकते। रामप्रसाद की कहानी सुरक्षित खेलने की कहानी है, लेकिन इतिहास गवाह है कि जिन लोगों ने जोखिम लिया, उन्होंने ही दुनिया बदली है।

अगर हर किसान रामप्रसाद की तरह सोचे, तो कोई भी नई फसल नहीं उगाएगा, नई तकनीक नहीं आजमाएगा। प्रगति के लिए प्रयोग जरूरी है, और प्रयोग में असफलता का जोखिम होता है।

संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता

मैं यह नहीं कह रहा कि मितव्ययिता बुरी है या दूरदर्शी सोच गलत है। लेकिन किसी भी चीज की अति नुकसानदायक होती है। जीवन में संतुलन जरूरी है। बचत करनी चाहिए, लेकिन खर्च भी करना चाहिए। भविष्य की तैयारी करनी चाहिए, लेकिन वर्तमान को भी जीना चाहिए। अपना ध्यान रखना चाहिए, लेकिन दूसरों की मदद भी करनी चाहिए।

रामप्रसाद की कहानी एक आयाम दिखाती है, लेकिन जीवन बहुआयामी है। हर समस्या का एक ही समाधान नहीं होता। कभी मितव्ययिता काम आती है, तो कभी उदारता। कभी सुरक्षित रास्ता सही होता है, तो कभी जोखिम लेना जरूरी होता है।

अंत में, हमें यह समझना होगा कि कोई भी कहानी पूर्ण सच्चाई नहीं होती। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। रामप्रसाद की कहानी प्रेरणादायक है, लेकिन हमें आंख बंद करके किसी भी विचारधारा को नहीं अपनाना चाहिए। सवाल करना, विपरीत दृष्टिकोण देखना और अपनी समझ से फैसला लेना - यही असली समझदारी है।